# आचार्य वसुनन्दि प्रथम

**जीवन-परिचय :** वसुनन्दि नाम के अनेक आचार्य हुए हैं। वसुनन्दि प्रथम ने प्रतिष्ठासंग्रह की रचना संस्कृत भाषा में की है और श्रावकाचार या उपासकाध्ययन की रचना प्राकृत भाषा में की है, अत: स्पष्ट है कि वे दोनों भाषाओं के ज्ञाता थे। आचार्य वसुनन्दि को उत्तरवर्ती आचार्यों ने सैद्धान्तिक उपाधि प्रदान की है।

आचार्य वसुनन्दि ने आचार्य नयनन्दि को अपने दादागुरु के रूप में और आचार्य नेमिचन्द्र को गुरु के रूप में स्मरण किया है।

आचार्य वसुनन्दि ने किसी भी ग्रन्थ में समय नहीं दिया है, परन्तु उनकी रचनाओं का उल्लेख 13वीं शताब्दी के विद्वान पंडित आशाधर ने अपने 'सागारधर्मामृत' की टीका में किया है। इससे इनका समय 13वीं शताब्दी के पूर्व निश्चित है। अन्य प्रमाणों के आधार पर यह निश्चित होता है कि इनका समय ई. सन् की 11वीं शताब्दी का अन्तिम चरण या 12वीं शताब्दी का प्रथम चरण है।

**रचना-परिचय :** आचार्य वसुनन्दि प्रथम के द्वारा दो ग्रन्थ रचित हैं—

**1. उपासकाध्ययन या श्रावकाचार :** इसमें कुल 546 गाथाएँ हैं। इसमें श्रावक को व्रती, उपासक, देशव्रती और आगारी आदि नाम दिए हैं। जो सच्चे देव, शास्त्र और गुरु की उपासना करता है, वह उपासक कहलाता है। इस ग्रन्थ में श्रावक के सम्पूर्ण आचार वर्णित किए गये हैं। यह ग्रन्थ 'वसुनन्दि-श्रावकाचार' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

**2. प्रतिष्ठासारसंग्रह :** इस ग्रन्थ में छ: अध्याय हैं। इस ग्रन्थ में पंचांग शुद्धि, लग्नशुद्धि, ग्रह-शुद्धि, भूमि-शुद्धि, भूमि-परीक्षा, दिग्देवता, वास्तु-पूजा, वास्तुपूजा के मंत्र आदि का वर्णन है। साथ ही जिनबिम्ब बनाने की विधि, मूर्तिनिर्माण की विधि, वेदिका निर्माण, मंडप निर्माण, वेदि शुद्धि आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों का वर्णन है। सकलीकरण, ध्वजारोपण एवं कलश-स्थापना आदि की विधियाँ भी विस्तार से इस ग्रन्थ में हैं।